Gurukul International Multidisciplinary Research Journal (GIMRJ)*with* International Impact Factor 8.357
Peer Reviewed Journal
https://doi.org/10.69758/GIMRJ/2503I3VXIIIP0001

e-ISSN No. 2394-8426
Monthly Issue
MAR-2025
Issue–III, Volume–XIII

इन्ना की आवाज में अभिव्यक्त सत्ता का चरित्र और आधुनिक भावबोध

डॉ. गरिमा सिंह
522A/21A/5A UNCHWAGARHI RAJAPUR
PRAYAGRAJ,U.P.PIN - 211002
Email id- garimasingh1095@gmail.com

शोध सारांश:
असगर वजाहत साठोत्तरी पीढ़ी के एक ऐसे रचनाकार हैं जिन्होंने सामाजिक यथार्थ को प्रस्तुत किया है। इन्होंने अपने नाटकों के माध्यम से उस सत्य को उद्घाटित किया है जो आज के राजनीतिक लोगों की ठीक से व्याख्या करता है। असगर वजाहत जी ने साहित्य की कई विधाओं में लेखन कार्य किया है लेकिन उन्हें सर्वाधिक प्रसिद्धि नाटक के क्षेत्र में ही प्राप्त हुई है। प्रस्तुत नाटक इन्ना की आवाज का कथानक मध्य एशिया से लिया गया है। लोक कथा पर आधारित यह नाटक आज के राजनैतिक लोगों के छद्म चरित्र को प्रस्तुत करता है। लोक जिसके अंदर समूचा संसार समाहित रहता है और जिससे समाज या समूह संचालित होता है कैसे एक नवीन भावबोध भी अपने भीतर समाहित किए रहता है वह इस नाटक में प्रस्तुत हुआ है।

बीज शब्द:कथानक, सामंती परिवेश, चरित्र प्रधान मध्यकालीन परिवेश, सठोत्तरी पीढ़ी, नैतिक मूल्य, साहस, दमनात्मक रवैया आदि

शोध विस्तार :

असगर वजाहत ने अपने इस नाटक के माध्यम से उस राजनैतिक चरित्र को दिखाया है जो सत्ता मिलते ही दमनात्मक रवैया अपनाना शुरू कर देता है। जबकि सत्ता से वंचित होते ही वह अपने पूर्व रूप को प्राप्त कर लेता है। यह नाटक असग़र वजाहत का दूसरा महत्वपूर्ण नाटक है। यह एक चरित्र प्रधान नाटक है जो कुल तेरह दृश्यों में विभाजित है। यह नाटक मध्यकालीन जीवन परिवेश व सामन्ती व्यवस्था का मार्मिक यथार्थ आधुनिक बोध के साथ प्रस्तुत करता हैजहाँ माननीय प्रकृतियों का जीवन की सफलता वअसफलता पर पड़ने वाले प्रभाव का कलात्मक चित्रण प्रस्तुत हुआ है। मनुष्य के जीवन मूल्यों को सामन्ती परिवेश में किस तरह से धूमिल कर दिया जाता है इसको बहुत सूक्ष्मता से इस नाटक में दिखाया गया है। मुख्य चरित्र इन्ना आज का आम इन्सान है। जिसका खुद का कोई व्यक्तित्व नहीं है। बल्कि इसकी परिस्थितियाँ ही इसका निर्माण करती हैं।कथा में यह दिखाया गया है कि एक सुल्तान गुलामों की मंडी से इन्ना नामक एक गुलाम खरीद कर मंगवाता है। इसी दौरान सुल्तान महल का निर्माण करवाता है। महल तैयार हो जाता है और जब गेट पर सुल्तान अपना नाम लिखवाता है तो उसकी जगह खुद ही इन्ना का नाम लिख उठता है। ऐसा क्यों हुआ और कैसे हुआ यही इस नाटक का केन्द्रीय बिन्दु है। सुल्तान द्वारा इन्ना को समरकंद (उज्बेकिस्तान) से एक गुलाम के रुप में खरीदा जाता है लेकिन परिस्थितियाँ इस तरह से निर्मित होती हैं कि इन्ना को सुल्तान के द्वारा वजीर जैसा पद और शोहरत प्राप्त होती है। लेकिन पुन: परिस्थितियाँ ऐसी निर्मित हो जाती है कि इन्ना को फिर से गुलाम मजदूर बन जाना पड़ता है।

प्रथम दृश्य में यह दिखाया गया है कि सुल्तान द्वारा बीस साल पहले दिये गये हुक्म के अनुसार

इमारत का निर्माण करना था जो अब बनकर तैयार हो गया है। अगले दिन सुल्तान महल देखने आये थे इन्ना एक चरवाहा है जो सुल्तान का गुलाम है। वह अपने काम के प्रति दृढ़ निश्चयी स्वभाव का है। वह प्यासे घोड़ों को पानी पिलाता है। इन्ना आम आदमी के रुप में निःस्वार्थ व्यक्तित्व का है, उसके साथ कई गुलाम हैं और वह सब की मदद करता है। इन्ना के बोलने और उसकी आवाज में इतनी ताकत है कि लोग उसके दीवाने हैं। जिस इमारत पर सुल्तान का नाम लिखा जाना है उस इमारत में खुद- ब- खुद बार-बार इन्ना का नाम स्वत: लिखा जाता है और सुल्तान का नाम लिखने पर भी बार- बार मिट जाता है। यह स्थिति यह दर्शाती है कि उन लोगों का सुल्तान इन्ना है जो सारी प्रथा और लोगों के दिलों पर राज करता है।

इसी तरह नाटककार ने दूसरे दृश्य में यह दर्शाया है कि फसी जो कि इन्ना के साथ समरकंद से आया था। वह इन्ना को बताता है कि इन्ना इमारत के बाहरी दीवार पर सुल्तान की जगह पर इन्ना का नाम लिख रहा है। इन्ना का चरित्र जो सत्ता और कलाकार के बीच हुए द्वन्द्व को दिखाता है जिसमें इन्ना एक ईमानदार चरित्र के रूप में हमारे सामने आता है। इसलिए उसका नाम बार-बार महल की दीवारों पर लिख उठता है- "बूढ़ा : मेरे बेटे... मेरे लाल... तेरा नाम महल के दरवाजे पर लिखा है... हाँ जिस महल को बनाते-बनाते मेरी आंखों की रोशनी मंद पड़ गई ...मेरी कमर झुक गई ...उस महल के दरवाजे पर तेरा नाम है ...तेरा...(तीन जवान मजदूर आते है। वे सब इन्ना की तरफ झपटते हैं। बूढ़ा अलग हार जाता है। एक जवान मजदूर खुशी से चिल्लाता है।"[1] तीसरा दृश्यसुल्तान का अपनी सत्ता के प्रति रुखा रवैय्या अपनाने को दर्शाता है। वह तानाशाही शासन करता है। प्रजा से कहता है कि हम हुकुमत जंग से सुलह जो भी करते हैं तो सब प्रजा के लिए ही करता हूँ। अगर मैं ही न रहूँगा तो तुम्हारी हिफाजत कौन करेगा। इसलिए मेरा सत्ता पर होना जैसी है सुल्तान जब इमारत की दरवाजों पर देखता है तो वहीं इन्ना का नाम लिखा हुआ दिखाई देता है। सुल्तान इन्ना से पूछता है वहाँ तुम्हारा नाम क्यों लिख रहा, तो इन्ना कहता है कि नहीं पता सुल्तान के साथ मल्का मजाक उड़ाते हुए कहता है कि कोई रूहानी ताकत नहीं है जो एक नाम अपने आप लिख जाता है और दूसरा मिट जाता है। सुल्तान कहता है- "इस दरवाजे पर मेरा नाम नहीं लिखा गया इसकी सिर्फ तीन वजह हो सकती है। हो सकता है कि नाम लिखने वाले जाहिल रहे हों। उन्हें लिखने के लिए कुछ दिया गया हो, उन्होंने लिख कुछ और दिया है।"[2] इस तरह गलत काम का परिणाम अन्तत: गलत ही होता है जो इस नाटक मेरा जा के माध्यम से दिखाई देता है। राजा, दरोगा को सजा देने की बात करता है लेकिन दरोगा स्वयं को बेकसूर बताता है।

चौथे दृश्य में नाटककार ने दर्शाया है कि सुल्तान पूछता है इन्ना कौन है। आपका गुलाम समरकंद के बाजार से कौड़ियों के भाव में खरीदा गया सुल्तान है। सुल्तान का सत्ता और पैसे के प्रति इतना लोभ है कि सुल्तान को गुलाम शब्द से ईर्ष्या है, सुल्तान कहता है- "बखुदा अगर मेरे बजाय वहाँ किसी दूसरे सुल्तान का नाम अपने आप लिख गया होता तो मुझे इतनी तकलीफ न होती। लेकिन एक गुलाम ... इन्ना को कत्ल कर दिया जाय वजीरे आलम... तब न इन्ना रहेगा और न उसका नाम।"[3] इस तरह कोई शासक या नेतृत्वकर्ता यदि कोई निर्णय बिना सोचे समझे बिना दूरदर्शिता के लेता है तो जो

1

2

3

उसकी प्रजा पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। वह इस कथन में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है इस नाटक मेरा जा का चरित्र ऐसा ही है। सुल्तान मनोरंजन में व्यस्त भोग विलास उसके उपकरण हैं। उसके सामने नर्तकियां नाच रही हैं, शक्तिशाली व्यक्ति के समक्ष धन, वैभव व विलास के जितने उपकरण हो सकते वह सब सुल्तान के पास मौजूद हैं। यह सब होते हुए भी सुल्तान बैचेन रहता है। वह इन्ना का कत्ल करना चाहता है लेकिन वजीर के समझाने पर सुल्तान मान जाता है।

पांचवें दृश्य मेंसुल्तान अपने आप से बात करते हुए यह कहता है कि दुनिया में ऐसी कौन सी चीज है हमारे पास जो नहीं है। किसे हम हरा नहीं सकते सुल्तान के अन्तर्मन से आवाज आती है, इन्ना अपने आप से डर जाता है। वह इन्ना को अपने सामने सिपाहियों से पेश करने को बोलता है तथा इन्ना से सवाल करता है कि तुम्हारा नाम महल के दरवाजे पर अपने आप किस प्रकार से लिख जाता है। सुल्तान या इन्ना नहीं समझ पाते की इन्ना का नाम क्यों लिख उठता है। सुल्तान, इन्ना से सवाल करता है कि ऐसा क्यों इन्ना सोचता है फिर वह सुल्तान को बताता है कि वह कितना ईमानदार चरित्र है। शायद इसी कारण ऐसा हो रहा है- "इन्ना (अटक-अटककर कहता है) म...मैं...घोड़ों को पानी पिलाया करता था। रात मेंरे झोपेड़े के सामने...गड़िया निकलती ...चढ़ाई पड़ती थी ...एक दिन पानी बरसा मैं ने सोचा घोड़े जब आयेंगे तो फिसलेंगे ... मैंने अपना बोरिया -बिस्तर चिथड़े किया... चढ़ाई पर डाल दिया... फिर घोड़े गिरे नहीं सर...।"[4] इन्ना कहता है कि वह एक ईमानदार व्यक्ति है, जो घोड़ों को ईमानदारी पानी पिलाता है, उनकी सेवा करता है। उनकी देखभाल करता है लेकिन इन्ना की नहीं सुनी जाती और उन्हें सुल्तान के सिपाही पकड़ ले जाते हैं। सुल्तान के साथ रहने वाली मल्का सुल्तान से कहती है कि इसको भी वहीं सजा सुना दी जाये जो बागी सूबेदारों को दी जाती है लेकिन राजा के सिपाही इन्ना को मारते नहीं हैं, बल्कि उसे महल में ले आकर कर उसे वजीर का पद दिया जाता है।

वजीरे आजम बनने के बाद इन्ना की वेशभूषा बदल जाती है। वह दरोगा से कहता है मुझे इन कपड़ों में घुटन हो रही है। वह दरोगा से अपनी विवशता और असहायता को जाहिर करता है। इस नाटक के माध्यम से नाटककार ने आम आदमी के व्यक्तित्व के अचानक ही किसी बड़े पद पर पहुँच जाने वाले व्यक्तित्व के अन्तर को साफ- साफ दिखाया है। सामान्य से एक तो वह अपना साधारण व्यक्तित्व खो देता है। इन्ना वजीरे आजम बनकर भी अकेला, असहाय, महसूस करता है। इन्ना वजीरे आजम बनने के बाद वह सब करता है जो एक राजा या सम्राट पद को प्राप्त करने के बाद करता है। वह नर्तकी के साथ मनोरंजन करता है।इस समय प्रजा परेशान और असहाय नजर आती है क्योंकि वजीरे आजम के पद पर बैठे हुए इन्ना अब किसी की बात नहीं सुनता है।

नाटक का अन्तिम दृश्य अत्यन्त महत्वपूर्ण है। जहाँ सल्तनत की अराजक एवं शोचनीय स्थिति हो गयी है इन्ना का दोस्त फसी के साथ अच्छा व्यवहार नहीं रखता है। उसे डांटता है और उपेक्षित करता है। इन्ना के भीतर सत्ता पूरी तरीके से हावी है, इसलिए वह अपने दोस्त फसी की बेइज्जती करके महल से बाहर निकाल देता है। इन्ना सत्ता में आते ही असंतुलित हो उठता है उसका बचपन अत्यंत अभावों में व्यतीत हुआ है। इस कारण वह सत्ता के तमाम पक्षों को मजबूती से नहीं संभाल पाता है और मूर्खतापूर्ण कार्यो को करने लगता है। इस संदर्भ में कलाकार डॉ.गुरुचरण सिंह का मानना है कि- "इन्ना ने

4

गरीबी और भूखमरी में जीवन बिताया है। मिलने के सुख को वह ठुकरा नहीं पाता। सुल्तान उसकी इसी कमजोरी का लाभ उठाता है। इसके साथ ही वजीरे आजम पद के योग्य भी नहींरहता या इसी कारण विफल रहता है। आज भी सरकारी पदों पर अधिकतर लोग पद के आसीन नहीं है। इन्ना आदेश देकर कार्य की पूर्ति समझ लेता है। उनका पालन किस रूप में हो रहा है। यह जानने का प्रयत्न नहीं करता। आज भी सरकार कई कानून बनाती है पर उसका पालन सही ढंग से नहीं हो पाता है। आज की स्थिति का यथार्थ इस नाटक में उभरती है।"[5] इस तरह साधारण पृष्ठभूमि से शिखर तक उठा हुआ इन्ना पुन: धाराशायी हो उठता है। इस नाटक की विषय वस्तु राजनीतिक है जहां सत्ताधारी, सत्ता में हमेशा बने रहना चाहता है और इसके लिए वह निरन्तर अनेक चालें चलता रहता है जो इस नाटक में सुल्तान के माध्यम से दिखाया गया है जो इन्ना को लगातार सत्ता और कला से बेदखल करने की कोशिश करता है। इस तरह आज का समसामयिक यथार्थ यह नाटक हमारे समक्ष प्रस्तुत करता है।

आज की वर्तमान राजनीतिक स्थितियां भी इस नाटक से मेल खाती हैं। नाटककार इस लोक कथा के माध्यम से राजनीति की वास्तविक स्थितियों से परिचित करवाता है और सत्ताधारियों की भ्रष्टता और सत्ता को प्राप्त करने के लिए अमानवीय लोलुपता को दिखाता है और एक अमानवीय रूप को सामने रखता है जहां व्यक्ति नैतिकता सेवा, ईमानदारी आदि मूल्य समाप्त हो रहे हैं और व्यक्ति समाज के भीतर स्वार्थ, क्रूरता हैवानियत जैसे तत्व जागृत हो रहे हैं, इसी की आड़ में जनता को बेवकूफ और भक्त बनाया जा रहा है। असग़र वजाहत का नाटक 'इन्ना की आवाज' मध्यकालीन परिवेश पर आधारित होने के बावजूद आधुनिक समय-संदर्भ में राजनीतिक चेहरे को बेनकाब करने में महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष :

प्रस्तुत नाटक में यह दिखाया गया है कि गलत कार्य करने का परिणाम गलत ही होता है, एक ताकतवर व्यक्ति महल पर अपना नाम तक नहीं लिखवा पा रहा था क्योंकि वह सच्चाई के मार्ग से भटक गया है वहीं जनता में इन्ना जो अभी एक नौकर है की लोकप्रियता दिन पर दिन बढ़ती चली जा रही है और आगे चलकर वही सुल्तान बन जाता है। लेकिन पद धारण करने के बाद उसके भीतर भी अनेक दुर्गुण आ जाते हैं जो एक सामंतों के स्वाभाविक दुर्गुण होते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1- अली डॉ.हैदर (सं.) असग़र वजाहत के नाटक,इन्ना की आवाज, खंड-1,पृ.सं. 106
2- वही, पृ.सं. 108
3- वही, पृ.सं.109
4- अली डॉ.हैदर (सं.) असग़र वजाहत के नाटक,इन्ना की आवाज, खंड-1,पृ.सं.112
5- अली डॉ.हैदर (सं.) असग़र वजाहत के नाटक,इन्ना की आवाज, खंड-1,, पृ.सं.44

5